ECONOMICS
(अर्थशास्त्र)

Dr. Swarnim Ghosh
(Assistant Professor)
[Mathematical Economics]
Dept. Of Economics
Govt. Degree college
Jakhhini, Varanasi
****
Mob: 9451218739
****
E-mail:
swarnimghosh@gmail.com
****

बी.ए - प्रथम वर्ष (सेमेस्टर – प्रथम)

(कौशल विकास पाठ्यक्रम)

प्रश्न पत्र का नाम –रचनात्मक कौशल के गांधीवादी आयाम

क्रेडिट -०३

इकाई- द्वितीय (सम्पूर्ण सिलेबस)

ई –कंटेंट 1.11

(महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में तैयार कौशल विकास पाठ्यक्रम)

स्वघोषणा

(Disclaimer/Self-Declaration)

“यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है | आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग प्रतिबंधित है | सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नही करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे | इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |”

“The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/ commercial purpose is strictly prohibited. The user of this content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge.”

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर2020

प्रश्न पत्र का नाम : रचनात्मक कौशल के गांधीवादी आयाम

इकाई द्वितीय :

सिलेबस

श्रम एवं कार्य की महत्ता , विकेन्द्रीयकरण , लघु उद्योग एवं गाँधी के विचार

- गांधी की शिल्प दृष्टि
- गांधी की कला दृष्टि
- गांधी की साहित्य दृष्टि
- गांधी की सौंदर्य दृष्टि संवाद कौशल

- **श्रम एवं कार्य की महत्ता एवं गांधी के विचार :**

गांधी जी ने श्रम के विभाजन पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि श्रम का विभाजन आवश्यक है | यह उचित नहीं है कि एक व्यक्ति ही सारा काम करे , संगठित कार्य –प्रणाली के लिए तो यह निश्चित रूप से बाधक है | गाँधी जी ने श्रम की गरिमा के बारे में कहा है कि- " मेरी धारणा है कि चूँकि हमारा अधिकाँश समय रोजी – रोटी के लिए श्रम करने में जाता है , इसलिए हमारे बच्चों को शुरू से ही इस प्रकार के श्रम की गरिमा का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए | हमारे बच्चों की शिक्षा ऐसी नहीं होनी चाहिए कि वे श्रम को हेय समझने लगे | कोई कारण नहीं है कि किसान का बेटा, स्कूल जाने के बाद, खेतिहर श्रमिक के रूप में काम करना न चाहे , जैसा कि आजकल देखने को मिल रहा है |" गाँधी जी ने श्रम की बचत की महत्ता की व्याख्या करते हुए कहा कि-" मैं मानव जाति के एक छोटे से अंश के लिए नहीं बल्कि सबके लिए समय और श्रम की बचत करना चाहता हूँ | हमारा उद्देश्य लोभ नहीं , अपितु व्यक्ति के श्रम की बचत करना होना चाहिए | मैं ऐसी मशीनों का कतई हिमायती नहीं हूँ जो या तो बहुत से लोगों को गरीब बनाकर मुट्ठी भर लोगों को अमीर बनाती है या अनेक लोगों के उपयोगी श्रम को अकारण विस्थापित कर देती है |"

गाँधी जी के अनुसार मशीनीकरण वहां ठीक है जहाँ काम की तुलना में काम करने वालों की कमी हो | उस स्थिति में जबकि काम की अपेक्षा उपलब्ध श्रमिकों की संख्या ज्यादा हो , जैसा की भारत में है , मशीन बुराई ही पैदा करती है | आराम केवल एक सीमा तक ही अच्छा और जरूरी है | ईश्वर ने हम सबको पसीना बहाकर अपनी रोटी कमाने के लिए पैदा किया है |

गाँधी जी कहते हैं कि –" मैं उस स्थिति की कल्पना मात्र से भयभीत हो जाता हूँ जब मनुष्य खाधान्न सहित अपनी आवश्यकता की सभी चीजें जादू की छड़ी घुमाकर पैदा करने में समर्थ होने का सपना देखने लगेगा |"
फैक्ट्री सैंकड़ों मजदूरों को काम देती है और हजारों को बेरोजगार कर देती है | गाँधी जी के अनुसार एक तेल मिल से टनों तेल का उत्पादन हो सकता है , लेकिन उससे हजारों तेली बेकार हो जायेंगे | गांधी जी ऐसी उर्जा को विनाशकारी कहते हैं | जबकि लाखों लोगों का श्रम और कार्य की महत्ता समझते हुए अपने हाथ से किया श्रम रचनात्मक होता है और उससे पुरे समाज का कल्याण होता है | उन्होंने श्रमिकों को अपने श्रम की शक्ति की पहचान करने को प्रोत्साहित किया | उन्होंने श्रमिकों के कौशल को पूंजी कहा | गाँधी जी ने बौद्धिक श्रम के महत्व से इनकार नहीं किया परन्तु उन्होंने शारीरिक श्रम को सर्वोपरि बताया | गाँधी जी के अनुसार कर्म पर जितना बल दिया जाये थोड़ा है | रोटी के लिए श्रम का अर्थशास्त्र जीती –जागती जीवन –पद्धति है | इसका मतलब यह है कि हर आदमी को अपनी रोटी – कपड़े के लिए शारीरिक श्रम करना होगा |
गाँधी जी कहते हैं कि –" अगर मैं लोगों को रोटी के लिए श्रम का महत्व और उसकी आवश्यकता को समझा सकूँ तो रोटी –कपड़े की कमी कभी नहीं पड़ेगी \ तब मैं आत्म विश्वास के साथ लोगों से यह कह सकूँगा कि अगर वे खेती , कताई अथवा बुनाई करने के लिए तैयार नहीं हैं तो उन्हें भूखे –नंगे रहना होगा |" उन्होंने कार्य को पूजा करने के समान बताया है | गांधी जी के अनुसार मुख्य महत्व श्रम का है , धातु का नहीं | कोई भी व्यक्ति जो श्रम का इस्तेमाल करेगा उसके पास धन होगा |

- **विकेन्द्रीयकरण और गांधी जी के विचार :**

गांधी जी के अनुसार , यदि भारत को अहिंसा के मार्ग पर अपना विकास करना है तो उसे बहुत सी चीजों का विकेन्द्रीयकरण करना होगा | पर्याप्त बल के बगैर केन्द्रीयकरण को कायम रखना और उसकी रक्षा करना संभव नहीं है | सादा मकानों के लिए जिनमें चुराने के वास्ते कुछ हो ही न , पुलिस का बंदोबस्त करने की जरुरत नहीं पड़ती | अमीरों के महलों को डाकुओं से बचाने के लिए भारी पहरे का इंतजाम करना पड़ता है |यही बात विशाल फक्टोर्यों पर भी लागू होती है | ग्रामीण आधार पर संगठित भारत को सैनिक , नौसैनिक और वायुसैनिक बलों से सुसज्जित शहरीकृत भारत की अपेक्षा बाहरी आक्रमण का खतरा बहुत कम होगा | जब उत्पादन और उपभोग दोनों स्थानीकृत होते हैं तो उत्पादन में अंधाधुंध और किसी भी कीमत पर वृद्धि करने का लालच समाप्त हो जाता है | तब हमारे वर्तमान अर्थतंत्र की सभी अनंत कठिनाइयाँ और समस्याएं समाप्त हो जायेंगी ... तब मुट्ठी भर लोगों के पास बेशुमार संचय और शेष लोगों को उसके बाबजूद वस्तुओं के अभाव की स्थिति पैदा नहीं होगी |

गाँधी जी के राजनैतिक एवं आर्थिक विकेन्द्रीयकरण सम्बन्धी विचार :
गाँधी जी कि आदर्श समाज की कल्पना ऐसी थी जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं शासक है अर्थात वह इतना आत्म –संयमित होगा कि उसमें समाज –विरोधी प्रवृतियोंके पनपने का सवाल ही नहीं होता |अतः उन्हें किसी भी प्रकार के बाहरी नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है | उन्होंने समाज के सभी सदस्यों से सत्याग्रह का पालन करने को कहा |

गांधी जी ग्राम स्वराज के विषय में स्वयं कहते हैं कि –" प्रत्येक ग्राम एक स्वराज्य होगा जो आत्मनिर्भर होगा , स्वयं प्रशासित होगा और अपनी सुरक्षा के लिए पूर्ण सक्षम होगा | उसकी अपनी पंचायत होगी , अपनी सरकार होगी और सारा गाव संगठित होकर एक व्यक्ति जैसा कार्य करेगा | ग्रामीण जनता सुरक्षित होगी और प्रत्येक सुसंस्कृत व्यक्ति की इक्षाएं ऐसे स्वराज में आत्म –नियत्रित होगी और उसकी आवश्यकताएं अपने श्रम और बराबर का श्रम करने वाले दुसरे व्यक्तिओं के अनुसार होगी |"

स्पष्ट है कि **गाँधी जी के राजनैतिक विकेन्द्रीयकरण के अंतर्गत** प्रत्येक ग्राम का छोटा संगठन होगा जिसमें समस्त व्यक्ति सक्रिय रूप से ग्राम के कार्यों में सहकारिता , भाईचारे तथा समन्वित रूप से योगदान देंगे | इस प्रकार के ग्राम की आर्थिक स्थिति के तीन आधारभूत सिद्धांत गांधी जी ने बताये वे हैं ; , रोजी –रोटी और स्वदेशी | सरल शब्दों में , राजनीतिक क्षेत्र में विकेन्द्रीयकरण का अर्थ गांधी जी के अनुसार ग्राम पंचायतों को अपने गावों का प्रबंधन और प्रशासन के सभी अधिकार दे दिए जाने से है | उनके मामले में राष्ट्रीय या प्रांतीय सरकारों का हस्तक्षेप और नियंत्रण कम हो जाने से है | जिससे राजनीतिक ढंग से स्वशासन का अधिकार उन्हें प्राप्त हो जाये |

जहाँ तक आर्थिक विकेन्द्रीयकरण का प्रश्न है तो गांधी जी के अनुसार, आर्थिक विकेन्द्रीयकरण का मतलब है की कारखानों में बड़े पैमाने पर मशीनों द्वारा किये जाने वाले उत्पादन के स्थान पर खादी, गुड़, तेल , घानी के सदृश लष एवं कुटीर उद्योग स्थापित करना है |

गांधी जी न तो पूर्णतः बड़े उद्योगों का विरोध करते हैं और न ही उनकी स्थापना का आर्थिक विकेन्द्रीयकरण के माध्यम से उनका उद्देश्य बस इतना ही था कि- मशीनें एवं यंत्रें मनुष्य के शोषण का कारण बनकर उन्हें स्वावलंबी से परावलम्बी न बना दे | बल्कि स्पष्ट है कि गाँधी जी शक्ति और धन दोनों के ही केन्द्रीकरण को राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में स्थित सभी बुराईयों की जड़ समझते थे | यही कारण है कि वे विकेन्द्रीयकरण को अत्यधिक महत्व देते थे | वे केन्द्रीकरण को किसी भी व्यक्ति के विकास में बाधा डालने वाले दुष्परिणामों के रूप में देखते थे |

- **लघु उद्योग एवं गांधी जी के विचार** :

गांधी जी ने देश के ग्रामीण क्षेत्रों को अहम् बताते हुए ग्राम स्वराज का उल्लेख किया जिसमें उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु लघु और कुटीर जैसे उद्योगों की चर्चा करते हुए बताते हैं कि कैसे लघु और कुटीर उद्योग गाव के विकास के साथ ही देश के विकास में सहायक हैं ? लघु और कुटीर उद्योग सम्बन्धी गांधी जी के विचार जिन्हें गांधी जी के आर्थिक दर्शन के रूप में देखा जाता है , राष्ट्रवादी भावना के साथ –साथ मानवतावादी विचारों से भी ओत –प्रोत नजर आते हैं जो अत्यंत ही सटीक रूप से देश की आर्थिक विकास व ग्राम्याविकास के साथ ही अपने संसाधनों के बल पर स्वावलंबी बन गरीबी , भूखमरी , बेरोजगारी जैसी समस्याओं का भी समाधान प्रस्तुत करता है |

गाँधी जी का मानना था कि भारत की तेजी से बढती हुई आबादी बेरोजगारी की समस्या को उत्पन्न कर सकती है और यदि हम भारतवासियों को इस समस्या से मुक्ति पानी है तो लघु एवं कुटीर उद्योगों को महत्व देना ही पड़ेगा | लघु और कुटीर उद्योगों में न केवल रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने की क्षमता है बल्कि नवाचार को आकर्षित करने की भी अधिक क्षमता है |

गाँधी जी ने लघु एवं कुटीर उद्यमों के क्षेत्र में चरखे के प्रयोग के जरिये खादी को भी एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में प्रस्तुत किया क्यूंकि उनका कहना था कि यदि हम विदेशी कपड़ों और परिधानों का प्रयोग करते हैं तो ब्रिटिश शासन को समाप्त करना संभव नहीं है इसलिए हमें चरखों के माध्यम से सूत बनाकर कपड़ों का उपयोग करना चाहिए | यही कारण था कि गाँधी जी ने १९१८ में खादी के लिए अपना आन्दोलन चलाया था | गाँधी जी कहते है कि –" चरखा सम्मान्य जनता की आशा का प्रतिक है |" गाँधी जी ने लघु उद्योग के बारे में बताते हुए कहा कि ये उद्योग मशीन की तुलना में श्रम को अधिक महत्व देते हैं जिससे बेरोजगारी जैसी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है | लघु उद्यमों में कार्य कर हम आत्म निर्भरता प्राप्त कर सकते हैं , क्यूंकि ये ऐसे उद्यम हैं जिनके स्थापना में बहुत क पूंजी की आवश्यकता पडती है | लघु उद्योगों के माध्यम से गाँधी जी श्रम गहन प्रोद्योगिकी को बल देना चाहते थे; धन और आय के केन्द्रीकरण को कम करना चाहते थे | जहाँ अधिक से अधिक श्रम का उपयोग हो |जो हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर सके | उनका मूल उद्देश्य लघु व कुटीर उद्योगों का विकास कर समाज के वंचित समुदायों का सामाजिक –आर्थिक विकास करना था | इस प्रकार स्पष्ट है की गांधी जी के लघु और कुटीर उद्योगों सम्बन्धी विचार भारत को पुनः नीचे के पायदान से संगठित करने की विचारधारा से सम्बंधित है | जो आदर्श ग्राम की परिकल्पना और स्थापना चाहता है | जहाँ सरल तकनीक , श्रम , कम पूंजी का निवेश कर हम श्रम तथा कृषि की ग्राम अर्थव्यवस्था को एक नई गति दे सकते हैं जिससे जमीनी स्तर से गरीबी उन्मूलन संभव है | गाँधी जी ने ग्रामीण आधारित लघु और कुटीर उद्योगों के रूप में हथकरघा , सेरीकलचर, हस्तशिल्प और ग्रामीण स्तर के पारिवारिक उद्यमों की स्थापना पर बल दिया | जो रोजगार की समस्याओं को बड़ी सरलता से दूर करता है | इस प्रकार उनका यह आर्थिक दर्शन एक शोषण रहित , आत्मनिर्भर तथा विकेन्द्रीयकरण से उत्प्रेरित है |

- **गांधी की शिल्प दृष्टि :**

गांधी जी कहते हैं कि- हम भारतीयों को सभी ग्रामीण कलाओं और शिल्पों का पुनरुद्धार और संरक्षण करना होगा |" शिल्प के अंतर्गत गांधी जी ने कताई और बुनाई पर सबसे अधिक जोर दिया | उनका कहना था कि यदि हमें भारत के गरीबों को खुशहाल करना है , तो उन्हें व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्त्रोत की आवश्यकता है | हम केवल कृषि पर निर्भर नहीं रह सकते | हमें रोजगार के अन्य विकल्पों की तलाश करनी होगी | वे मानते थे कि सबमें कुछ न कुछ कौशल है और उसको अपने इस कौशल का उपयोग करना चाहिए | गाँधी जी कहते हैं ; ग्रामवासियों को अपने कौशल में इतनी वृद्धि कर लेनी चाहिए कि उनके द्वारा तैयार की गयी चीजें बाहर जाते ही हाथों –हाथ बिक जाएँ | जब हमारे गावों का पूर्ण विकास हो जायेगा तो वहां ऊँचे दर्जे के कौशल और कलात्मक प्रतिभा वाले लोगों की कमी नही रहेगी | तब गावों के अपने कवि भी होंगे , कलाकार होंगे , वास्तुशिल्पी होंगे , भाषाविद होंगे और अनुसंधानकर्ता भी होंगे | संक्षेप में , गाँधी जी की शिल्पदृष्टि यह है कि जीवन में जो कुछ भी प्राप्य है , वह सभी गावों में उपलब्ध होगा |

गांधी जी कहते हैं कि; आज हमारे गाव गोबर के ढेर मात्र हैं | कल वे शिल्प के माध्यम से सुंदर –सुंदर वाटिकाओं का रूप ले लेंगे जिनमें इतनी प्रखर बुद्धि के लोग निवास करेंगे जिन्हे न कोई धोखा दे सकेगा और न उनका शोषण कर सकेगा | हमें गावों के पुनर्निर्माण का कार्य तत्काल शुरू कर देना चाहिए ..... गावों का पुनर्निर्माण अस्थायी नहीं बल्कि स्थायी आधार पर किया जाना चाहिए | गाँधी जी की योजना में स्थानीय दस्तकारों व स्थानीय शिल्प का स्थान केंद्र में था |

- **गांधी की कला दृष्टि** :

गांधी जी ने भी अन्य लोगों की तरह एक सीधे , सरल और बेहद विनय पूर्ण ढंग से कला को आत्म –अभिव्यक्ति कहा है वे मनुष्य को स्वयं को जान्ने के लिए जीवन की कला ; इसके साहचर्य की बात करते हैं | वे कहते हैं कि- मनुष्य कलाओं के साहचर्य को अन्य बातों के तरह ही अपने में कायम रखना सीखे तभी उसका स्वयं के साथ सम्बन्ध बन पायेगा | यह सम्बन्ध कलापूर्ण ढंग से मनुष्य के विवेक , आचरण और उसके अपने सहज होने से सम्बंधित है | जीवन की सादगी और कला से गांधी जी का आत्मिक सम्बन्ध था | भारतीय दृश्य कलाओं एवं शास्त्रीय संगीत में भी गांधी जी की महत्वपूर्ण मौजूदगी रही है | यह गांधी जी का ही आकर्षण था जो कुमार गन्धर्व जैसे निर्गुणी गायक को भी स्वनिर्मित राग गांधी – मल्हार गाने को प्रेरित करता है तो रविशंकर का सितार मोहन कोंस के सुर छेड़ता है | गाँधी जी की प्रार्थना सभाओं में एम् .एस. सुब्बलक्ष्मी के द्वारा गाये जाने वाले भजन और मूर्धन्य साहित्यकार सैयद हैदर रजा के चित्रों के रंगों से गांधी का मुखरित होना , शान्तिनिकेतन के युवा चित्रकार नारायण श्रीधर बेंद्रे के भारत छोड़ो का चित्रण , रविन्द्रनाथ टैगोर के शान्तिनिकेतन , शान्तिनिकेतन के कला शिक्षक अवनीन्द्रनाथ टैगोर समेत दृश्य कला और चित्र कला के साथ सभी जीवन और भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और हम भारतीयों की कलाओं में गांधी जी की एक स्थायी भाव को निरंतर ध्वनित कर रहा है | जो बताता हा कि गांधी का कला दर्शन पूर्णतः प्रकृति से उपजा सत्य था | भारत की कला के पुनर्जागरण काल को गांधी जी ने अपने दर्शन से पूर्णतः प्रभावित कर दिया था | इसप्रकार , मनुष्य को कलाओं के सहचर्य में रहने के पक्षधर महात्मा गाँधी की कला दृष्टि हमें यह बताती है कि हम सभी मनुष्य शांतिपूर्ण सक्रियता के माध्यम से ही दुनिया को बदलने की क्षमता रखते हैं | लगातार कलाओं की शरण जाकर ही हम शांति और आत्म परिवर्तन को महसूस कर सकते हैं | अतः गाँधी की कला दृष्टि जीवन जीने की कला से सम्बंधित है |

गाँधी जी कला में सत्य को ढूंढते थे |गाँधी जी के अनुसार यदि कला में सत्यता है तो वह सभी के लिए उपयोगी हो सकती है | गाँधी जी कहते हैं कि- “ मैं समझता हूँ कि ईसा मसीह सर्वोत्कृष्ट कलाकार थे , चूँकि उन्होंने सत्य के दर्शन किये थे और उसे अभिव्यक्त किया था |” इसी प्रकार वे मोहम्मद साहब के ‘कुरान ‘को भी सबसे श्रेष्ठ कृति मानते हैं | गांधी जी मानते थे कि, कला को जनोपयोगी होना चाहिए | उनके अनुसार कला सिर्फ कला के लिए नहीं वरन आमजन के लिए होनी चाहिए | उन्होंने साफ़ कहा है कि –'' मैं उस कला का पक्षधर हूँ जो जनता से जुड़ा हो | वही कला , कला है जो सुखकर हो | सच्ची कला केवल आकार पर नहीं बल्कि उसकी पृष्ठभूमि में जो है , उस पर भी ध्यान केन्द्रित करती है | एक कला वह है जो मारती है और एक कला वह है जो जीवन देती है | सच्ची कला रचनाकार की सुख –शान्ति , संतोष और शुचिता का प्रमाण होनी चाहिए | जीवन सब कलाओं से बढकर है | गाँधी जी मानते हैं कि जिसने जीवन में पूर्णता को प्राप्त कर लिया , वही सच्चा कलाकार है | वे कला वस्तुओं के मूल्य को तब सार्थक मानते हैं जब वह आत्मा की सिद्धि की दिशा में अग्रसर होने में सहायक हो | महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक “ एक्सपेरीमेंट विथ टू” में कला के बारे में लिखा है –'' मैं जानता हूँ कि बहुत से व्यक्ति अपने –आप को कलाकार मानते हैं और उन्हें इस रूप में मान्यता भी प्राप्त है लेकिन उनकी कृतियों में आत्मा के उदग्र आवेग और आकुलता का लेश भी नहीं होता जबकि प्रत्येक सच्ची कला आत्मा के आंतरिक स्वरुप की सिद्धि में सहायक होनी चाहिए |” गाँधी जी कला में प्राकृतिक तत्वों को असीमित मानते थे | उनके अनुसार मानवीय कला प्राकृतिक कला के सामने कुछ भी नहीं है | कला के महत्व के साथ ही गाँधी जी ने कला के उद्देश्य को भी स्पष्ट किया , जो कला की गुणवत्ता को सिद्ध करता है |

- **गाँधी की साहित्य दृष्टि :**

गांधी जी अंग्रेजी अथवा उसके उदात्त साहित्य की निंदा नहीं करते थे | 'हरिजन 'के स्तम्भ मेरे अंग्रेजी प्रेम के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं |लेकिन जिस प्रकार इंग्लॅण्ड की शीतोष्ण जलवायु या दृश्यावली का लाभ भारत नहीं उठा सकता , उसी प्रकार अंग्रेजी उदात्त साहित्य भारत के काम नहीं आ सकता | गाँधी जी कहते हैं कि ; भारत को अपनी ही जलवायु , अपनी ही दृश्यावली और अपने ही साहित्य में पनपना होगा |भले ही इंग्लॅण्ड की जलवायु , दृश्यावली और साहित्य से हमारा साहित्य कमतर हो | हमें और हमारी संतानों को अपनी ही विरासत पर अपनी प्रगति का प्रासाद खड़ा करना है |यदि हम किसी दुसरे की विरासत उधार लेंगे तो अपनी ही विरासत को खो बैठेंगे | हम पराया अन्न खाकर कभी पनप नहीं सकते | मैं चाहूँगा की हम अंग्रेजी और उसी प्रकार विश्व की अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य को भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़े | मुझे रविन्द्रनाथ की अनुपम कृतियों का रसास्वादन करने के लिए बंगला सीखने की आवश्यकता नहीं है | उन्हें मैं सुन्दर अनुवादों के माध्यम से पढ़ सकता हूँ | टॉलस्टॉय की लघु कथाओं का आनंद लेने के लिए गुजराती लड़के –लड़कियों को रुसी भाषा नहीं पढनी पड़ती | उन्हें वे अच्छे अनुवादों के माध्यम से पढ़ सकते हैं | जब अंग्रेजों को इस बात का गर्व है कि विश्व का सर्वोत्कृष्ट साहित्य प्रकाशन के एक सप्ताह के अंदर –अंदर राष्ट्र को सरल अंग्रेजी में उपलब्ध हो जाता है | तो फिर , मुझे शैक्सपियर और मिल्टन का साहित्य पढने के लिए अंग्रेजी सीखने की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए ?

गाँधी जी कहते हैं कि कठिनाई अपने मन को स्थायी मूल्यों को ग्रहण करने के अनुकूल बनाने में होती है | यदि हम भारतीयों को राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों से सम्बंधित आधुनिक विचारों का अध्ययन करना है तो हमारी उत्सुकता को शांत करने के लिए

साहित्य उपलब्ध है | जितनी सरलता से धार्मिक साहित्य उपलब्ध है उतनी सरलता से आधुनिक साहित्य उपलब्ध नहीं | लेकिन समय के साथ इसमें प्रगति अवश्य होगी | हम भारतीयों को चैतन्य , रामकृष्ण , तुलसीदास , कबीर , नानक , दादू , तुकाराम , तिरुवल्लुवर आदि अनेक जाने –माने महापुरुषों की रचनाओं को पढकर सुख प्राप्त करना चाहिए |
गाँधी जी की इस साहित्यिक दृष्टि एवं मानवतावादी वैचारिक चिंतन का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर आज तक पुरे भारतीय साहित्य पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ा, विशेषकर हिंदी साहित्य पर | गांधी जी का हिंदी साहित्य से गहरा लगाव था , इसलिए उन्होंने हिंदी साहित्य के माध्यम से समस्त भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया | गांधीवादी साहित्य दृष्टि कहती है कि संस्कृति और सभ्यता के आदर्श की बात करनेवाली साहित्य ही भारतीय साहित्य हो सकती है | यही कारण है कि आधुनिक हिंदी नाटककारों और रंगकर्मियों ने भी गांधी के जीवन और विचारों के विभिन्न पहलुओं को अपने – अपने दृष्टि से चित्रित किया है | महात्मा गाँधी ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को बनाया |

- **गाँधी की सौंदर्य दृष्टि संवाद कौशल** :

महात्मा गाँधी के सौन्दर्य दृष्टि और संवाद कौशल की अद्भुत समझ थी | गाँधी जी कहते हैं –" सत्य का शोध पहली चीज है , सौन्दर्य और शुभत्व उसमें अपने आप जुड़ जाते हैं |" वे कला , सौन्दर्य और सत्य को परस्पर पूरक मानते हुए कहते हैं कि – सच्चे कलाकार की दृष्टि में वही मुख सुंदर है जो अपने बाहरी रूप से भिन्न , आत्मा के भीतर प्रतिष्ठित सत्य से आलोकित है | सत्य से भिन्न कोई सौन्दर्य नहीं है |सत्य बाहर से तनिक भी सुंदर नही हो सकता है | उन्होंने सुकरात को सुंदर कहा जिनकी मुखाकृति ग्रीस में सबसे कुरूप थी परन्तु उन्होंने आजीवन सत्य के लिए संघर्ष किया , यह सुकरात के आंतरिक सौन्दर्य को परिलक्षित करता है | इसप्रकार सौन्दर्य के बारे में महात्मा गांधी जी के विचार वास्तव में क्रांतिकारी हैं ; वे अनगढ़ वस्तुओं में भी सौन्दर्य देख लेते हैं बशर्ते वह वास्तु उपयोगी हो और सत्य के मार्ग पर ले जाती हो | गाँधी जी स्वयं कहते हैं –" जो सुंदर है , उसका उपयोगी होना आवश्यक नहीं है और जो उपयोगी है , वह सुंदर नही हो सकता | जो उपयोगी है , उसमें आंतरिक सौन्दर्य व्याप्त होता है | वे सत्य में सौन्दर्य को पाते हैं |

जहाँ तक गांधी जी के संवाद कौशल दृष्टि का प्रश्न है तो यह गांधी जी की सत्य की खोज ही है की उनके संवाद में अभिव्यक्ति का सौन्दर्य नजर आता है | संवाद व्यक्ति के मन के भाव – विचार , जान्ने समझने और बताने का उत्तम साधन है | संवाद में स्वाभाविकता होती है | गांधी जी जी संवाद शैली और विचार शक्ति ही उन्हें अद्भुत व्यक्तित्व का स्वामी बना देती है | गांधी जी का जीवन और आचरण ही संवाद है | गाँधी जी को अंतर –व्यैक्तिक संचार और संवाद में महारथ हासिल था जो दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचना के प्रसार से सम्बंधित है , इसके अंतर्गत बोलने , सुनने से लेकर किसी व्यक्ति को सहमत करने तक के आयाम आते हैं | अद्भुत संवाद कौशल के कारण ही उन्होंने प्रतीकात्मक आन्दोलन के माध्यम से दोहरे लक्ष्य को प्राप्त कर लिया |

गाँधी जी अधिकतम संप्रेषणीयता के लिए लक्षित पाठकों की सुविधा की भाषा का चयन करते थे | यही कारण था कि दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी की 'इंडियन ओपिनियन ' गुजराती , हिंदी , तमिल और अंग्रेजी चार भाषाओं में प्रकाशित होता था | वे लेखन की भाषा को भी सरल और दृढ रखते थे | यहाँ तक कि जब वे सत्य , अहिंसा , सत्याग्रह और सात पाप जैसे दार्शनिक सिद्धांतो का प्रतिपादन करते हैं तब भी अपनी भाषा को यथासंभव सरल ही रखते हैं | गांधी जी की अपनी आत्मकथा में 'सत्याग्रह 'शब्द की खोज की लम्बी प्रक्रिया का वर्णन है जो उनकी शब्द सहजता संवाद लेखन कौशल को प्रकट करता है | गाँधी जी अपने हावभाव व शारीरिक चेष्टाओं से भी संवाद करते हैं | उदहारण के लिए , आम –जनमानस से भावनात्मक जुड़ाव के लिए उन्होंने पाश्चात्य वस्त्रों का त्याग कर मात्र एक धोती के आवरण को ही ग्रहण किया | गांधी जी संवाद के अंतर्गत सूचना प्रेषक और ग्रहणकर्ता के मध्य विभिन्न कुशलताओं की उपस्थिति की व्याख्या करने के साथ ही भावनात्मक बुद्धिमता के अंतर्गत भावनाओं के प्रबंधन पर जोर देते हैं | वे संवाद कौशल के दोनों ही पैमाने पर खरे उतरते हैं जहाँ एक बच्चे की गुड़ खाने की लत से लेकर नाजीवाद के उभार से उत्पन्न अंतर्राष्ट्रीय समस्या तक पर विचार व्यक्त करते हैं और प्रत्येक समस्या का सर्वकालिक तथा सर्वदेशीय हल सुझाते हैं |अपने सुझाव को स्थायी तथा प्रसारणीय बनाने के लिए लेखन कार्य भी करते हैं | वे संवाद कौशल को गति प्रदान करने के उद्देश्य से समय –समय पर विभिन्न समाचार पत्रों इंडियन ओपिनियन , यंग इंडिया , नवजीवन , हरिजन , सेवक इत्यादि का प्रकाशन भी स्वयं करते हैं | एक बार गाँधी जी एक साधारण किसान के आमंत्रण पर चंपारण गये | उस समय उनका भोजपुरी , मैथिली , मगही , कैथी इत्यादि स्थानीय भाषाओं से कोई परिचय नहीं था | गांधी जी ने सुहानुभूति के माध्यम से चम्पारण के किसानों के हृदय में स्थान बना लिया | उनके एक

उनके एक आह्वाहन पर पूरा चंपारण बलिदान देने को तैयार हो गया | इस तरह संवाद कौशल के बदौलत उन्होंने एक तरफ भारत के लोगों में दमन के प्रति निर्भीकता का विकास किया तो दूसरी तरफ ब्रिटिश सभ्यता और 'व्हाईट मैंन बड्रेन' को दुनिया के सामने बेनकाब भी कर दिया | वे सदैव साधारण शब्दों और शांत शैली में भाषण देते थे | परन्तु जब देश की स्वाधीनता का सवाल उठा तो गोवालिया टैंक बॉम्बे में दिया गया भाषण इतिहास के सबसे प्रेरक भाषणों में से एक बन गया | गांधी जी की संवाद क्षमता का सामर्थ्य इसमें भी है कि मार्टिन लूथर किंग जूनियर से लेकर आंग सान सू की पूरी दुनिया में अन्याय के विरुद्ध युद्ध में कमजोरों को शक्ति प्रदान करने में , गांधी जी के संवाद कौशल का अभूतपूर्व योगदान है |

- **निष्कर्ष** :

इसप्रकार हम पाते हैं कि गांधीवादी चिन्तन पद्धति एक पूर्णांग जीवन का परिदृश्य एवं परिकल्पना को लेकर चलती है जो आज के समय में मनुष्य की मनुष्यता को बचाए रखने और तीसरी दुनिया के अभावग्रस्त और पिछड़े देशों के लिए स्वदेशीपन , सादगी और सहजता के सूत्र पर आधारित है जो गांधीवादी रूचि –बोध , सौन्दर्य , कला , शिल्प , संवाद की पद्धति और जीवन पद्धति को समझने में सहायक है और आज के युवा पीढ़ी का पथ – प्रदर्शन करती है |
आवश्यकता समझ विकसित करने की है कि गांधी जी की यह व्यापक दृष्टि कैसे बनी ? वे स्वयम सभ्यतागत दृष्टि से कौन –कौन से कार्य कर रहे थे ? स्वतंत्रता आन्दोलन के संघर्ष को वे कैसे सभ्यता के संघर्ष का विमर्श बना रहे थे ? व्यापक चिंतन की आवश्यकता है |

सन्दर्भ :

1. गांधी , एम् .के . (रिप्रिंट २००५), कंसट्रकटिव प्रोग्राम ; इट्स मिलिंग एंड प्लेस , नवाजीवन , अहमदाबाद |

2. गांधी , एम्.के.रिप्रिंट (१९५४), सर्वोदय , नवजीवन अहमदाबाद |

3. गंगराडे के.डी . (२००५), गांधीवादी एप्रोच टू डेवलपमेंट एंड सोशल वर्क , कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी , नई दिल्ली |

4. गंगराडे , के.डी .(२००१) , कंसट्रकटिव प्रोग्राम्स , गांधी जी स्मृति एंड दर्शन समिति , नई दिल्ली |

5. गांगुली , बी .एन . (१९७८) , गांधीजी सोशन फिलोसोफी, विकास पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली |

6. गुप्ता , एस .एस.(१९७६) , द इकनोमिक फिलोसोफी ऑफ़ महात्मा गांधी , अशोक पब्लिशिंग हाउस , दिल्ली |

7. कुमारप्पा , जे .सी . (१९५१)गांधीवादी इकनोमिक घाट, वोरा एंड की बोम्बे |

11 . हरिजन , ३१-3-१९४६, पृष्ठ संख्या .61

12. यंग इंडिया , 1-9 -1921, पृष्ठ संख्या .277

13. हरिजन , 16 -5 -1936, पृष्ठ संख्या .111

14. नंदा , १९८०

15. हरिभूमि पोर्टल महात्मा गांधीवाद क्या है ? लेख

16. संपा .अमृतलाल याग्निक , गुजरात में गांधी युग (एतिहासिक और साहित्यिक अवलोकन , आचार्य काकासाहेब कालेलकर स्मारक निधि सन्निधि , राजघाट , नई दिल्ली , प्र.सं.१९९६ , पृष्ठ संख्या .८०